International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 107-108

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 107-108
www.allresearchjournal.com
Received: 22-04-2015
Accepted: 28-05-2015

डॉ. संतोष गुप्ता
व्याख्याता–इतिहास
एम.एस.जे. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. संतोष गुप्ता
व्याख्याता–इतिहास
एम.एस.जे. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

जैन संस्कृत पुराणों में नारी के संदर्भ में धार्मिक जीवन

डॉ. संतोष गुप्ता

सारांश
जैन संस्कृत पुराणों में नारी के धार्मिक जीवन पर अत्यधिक प्रकाश डाला गया है। उस समय में नारियाँ धार्मिक जीवन के साथ व्रत–उपवास किया करती थीं। तप में रत नारियों को तपस्विनी, आर्यिका, श्राविका कहा गया है। स्त्रियों द्वारा महातप का भी उल्लेख मिलता है। विमला और सुप्रभा नामक देवियाँ नन्दीश्वर पर्व की यात्रा में जिनपूजा के लिए आयी थी, लेकिन किसी कारणवश ये संसार से विरक्त हो महातप करने लगीं। जैन संस्कृत पुराणों में अनेक देवियों जैसे– सरस्वती, लक्ष्मी, शचि एवं अनेक अप्सराओं का भी वर्णन मिलता है। यही कारण है कि इन पुराणों में नारी के धार्मिक जीवन पर अत्यधिक गहराई से प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः जैन संस्कृत पुराणों, नारी, धार्मिक जीवन

प्रस्तावना
जो धारण करे वह धर्म है। 'धरतीति धर्मः' अच्छी तरह से आचरण किया हुआ धर्म दुर्गति में पड़ते हुए जीवों को बचा लेता है, इसलिए वह धर्म कहलाता है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कशाय (कशाय – जो आत्मा को दुख दे) महाशत्रु हैं, इन्हीं के द्वारा जीव संसार में परिभ्रमण करता है। क्षमा से क्रोध का, मृदुता से मान का, सरलता से माया का और संतोष से लोभ का निग्रह करना चाहिए। स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये पाँच इन्द्रियाँ प्रसिद्ध हैं, इनका जीतना धर्म कहलाता है। त्याग भी विशेष धर्म कहलाता है।
पुराणों में नारी के धार्मिक जीवन पर काफी प्रकाश डाला गया है। उस समय में नारियाँ धार्मिक जीवन के साथ कौन–कौन से व्रत–उपवास करती थी, इन सभी बातों का पता चलता है। तप में रत नारियों को तपस्विनी, आर्यिका, श्राविका, कहा गया है। संभवतः ऐसी स्त्रियाँ जिनकी संसार में रुचि नहीं रहती थी, वे आर्यिका बन जाती थी। एक स्थान पर आर्यिकाओं की पंक्ति का उल्लेख आया है जिसमें वे ऐसे सुशोभित हो रही थी मानों चमकती हुई बिजलियों से आलिंगित शरदऋतु की मेघपंक्ति सुशोभित होती है। श्रीवर्धमान की सभा में एक स्थल पर 35 हजार आर्यिकाओं का उल्लेख है। ऋषभनाथ की सभा में तीन आर्यिकाओं के बैठने का उल्लेख मिलता है। महावीर भगवान के समवसरण में पैंतीस हजार आर्यिकाएँ मानी गयी हैं। आत्म तत्व को जानने वाली 50 हजार आर्यिकाओं का वर्णन मिलता है।
श्राविकाओं के भी उल्लेख मिलते हैं। श्राविकाएँ गृहस्थ जीवन में रहकर धर्म का पालन करती थी, लेकिन इनका जीवन तपस्विनियों और आर्यिकाओं जैसा कठोर नहीं होता था। एक स्थान पर पाँच लाख श्राविकाओं का उल्लेख मिलता है। एक स्थान पर एक लाख श्राविकाओं का उल्लेख मिलता है। राजमती को साथ लेकर चालीस हजार आर्यिकाएँ तथा श्रावक के व्रत को धारण करने वाली तीन लाख छत्तीस हजार श्राविकाओं के विद्यमान होने का उल्लेख मिलता है।
प्रारम्भ के आठ तीर्थंकरों के समवसरण में प्रत्येक की पाँच–पाँच लाख, फिर आठ तीर्थंकरों की प्रत्येक की चार–चार लाख और तदन्तर शेष आठ तीर्थंकरों की प्रत्येक की तीन–तीन लाख श्राविकाएँ होने का उल्लेख है। तपस्विनियों द्वारा तप करने पर मोक्ष प्राप्ति का भी उल्लेख मिलता है।
इसी तरह अनेक स्त्रियों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने दीक्षा लेकर तप धारण किया। विमुचि की स्त्री अनुकोश और कमान की माता ऊरी इन दोनों ब्राह्मणियों ने कमलकान्ता नामक आर्यिका के पास दीक्षा लेकर तप धारण किया।
ऐसे उल्लेख भी मिलते हैं जहाँ धर्म का पालन नहीं करने पर संसार में ही भ्रमण करना पड़ता था। हस्तिनापुर नगर में एक उपास्ति नामक गृहस्थ था। उसकी दीपणी नामक स्त्री थी। वह दीपणी मिथ्या अभिमान से पूर्ण थी, श्रद्धा से रहित थी, क्रोध तथा मात्सर्य रूपी विष को धारण करने वाली थी, दुष्ट भावों से युक्त थी, उसके शब्द सदा साधुओं की निन्दा करने में तत्पर रहते थे।

वह न कभी स्वयं किसी को आहार देती थी और न देते हुए किसी दूसरे को अनुमोदन करती थी। यदि कोई दान आदि सत्कर्मों में प्रवृत्त होता था तो उसे वह प्रयत्नपूर्वक मना करती थी। इत्यादि अनेक महादोषों से युक्त थी और कुतीर्थ की भावना से युक्त थी। इस प्रकार समय व्यतीत होने पर वह साररहित संसार में भ्रमण करती रही।

स्वजनों की अनुमति से कन्याओं के तप ग्रहण करने के भी उल्लेख है। पूतिगन्धा नामक कन्या का सोपारक नगर में आर्यिकाओं की उपासना करके उनके साथ तप करने का उल्लेख है। वहाँ से वह राजगृह चली गयी। वहाँ वंदना करने योग्य जो सिद्धशिला थी, उसकी वंदना कर वह वहीं नीलगुहा में रहने लगी और सल्लेखना धारण कर मृत्यु को प्राप्त हुई।

राजमती को तप धारण करने की प्रेरणा देने वाले गुरुजनों के हितकारी वचनों से जब उसके शोक का भार शान्त हो गया तब उसने अपाय–बाधा से रहित, शान्तिरूपी सुख के दायक एवं दुर्भाग्य को दूर करने वाले तप में बुद्धि लगायी।

कृष्ण की छोटी बहिन द्वारा भी दीक्षा लेने का उल्लेख मिलता है। उसने आर्यिकाओं के समूह की प्रधान सुव्रता नामक गणिनी के चरणों की शरण प्राप्त की। उसने समस्त बन्धुजनों को त्यागकर उसने सफेद साड़ी से स्तनों को ढका तथा कर से केशों को उखाड़कर आर्यिका बन गयी। उसने अपने आभूषण तथा मालाएँ उतार कर फेंक दी तथा अपने कोमल, अंगुलियों से अपने बंधे हुए समस्त वालों को उखाड़ती हुई ऐसी जान पड़ती थी मानों बुद्धिरूपी कुटी के भीतर विद्यमान शल्यों के समूह को उखाड़ रही हो। जघन, वक्षस्थल, स्तन, उदर, और चरणों पर्यन्त समस्त शरीर को एक अत्यंत कोमल वस्त्र से आच्छादित करती हुई वह सती उस समय चिरकाल तक शरद ऋतु की उस नदी के समान सुशोभित हो रही थी जिसने स्वच्छ जल से अपने बालुमय स्थल को ढक लिया हो। व्रत, गुण, संयम, तथा उपवास आदि तपों एवं प्रतिदिन भायी जाने वाली अनित्य आदि भावनाओं से जो विशुद्ध भावों को प्राप्त हुई थी और सदा आर्यिकाओं के समूह के साथ निवास करती थी, ऐसी वह आर्यिका तपस्या करती रहती थी।

प्रीतिमती जब गतियुद्ध में जीत गयी और कोई उसकी प्रतिज्ञा को पूर्ण नहीं कर सका तो उसके पिता ने उसको तप धारण करने के लिए आज्ञा दे दी जिससे प्रीतिमती ने व्रतों के समूह से सुशोभित हो निवृत्ति नामक आर्यिका से दीक्षा ग्रहण कर ली। ब्राह्मी और सुन्दरी नामक दोनों कन्याओं ने अनेक स्त्रियों के समूह के साथ आर्यिकाओं के गणिनी पद पर पहुँची। एक स्थान पर सीता द्वारा केवलियों की पूजा का भी उल्लेख है।

उस समय भी स्त्रियाँ मुनियों का पारणा करती थी। राम और सीता ने गगन से आते हुए दो मुनियों को देखा तो उठकर खड़े हो गये। उनके पास जाकर स्तुति व नमस्कार किया। सीता जो अत्यन्त श्रद्धा से युक्त थी, उसने अपने पति के साथ मुनियों के लिए भोजन परोसा। आहार प्रदान किया। वह आहार वन में उत्पन्न हुई गायों और भैंसों के ताजे मनोहर घी, दूध तथा उनसे निर्मित अन्य मावा आदि पदार्थों से बना था। खजूर, आम, नारियल, रसहार, बेर आदि फलों से निर्मित था। इस प्रकार शास्त्रोक्त शुद्धि से सहित नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों से उन मुनियों का पारणा किया।

वज्रजंघ और श्रीमती द्वारा भी श्रीमान दमघर नामक मुनिराज और सागर सेन नामक मुनिराज का पारणा करने का भी उल्लेख है। पुण्यात्मा वज्रजंघ और श्रीमती दोनों ने मुनियों को हाथ जोड़कर अर्ध्य दिया और दोनों को भोजनशाला में प्रवेश कराया। इस प्रकार नारियों द्वारा मुनियों का श्रद्धा के साथ सत्कार किया जाता था।

राजा सुमुख तथा वनमाला द्वारा पारणा देने का उल्लेख भी है। उन्होंने सुगन्धित धूप, दीप, चन्दन, शुभ अक्षत, नैवेध आदि अष्टद्रव्य से पूजा कर मन, वचन, कर्म से नमस्कार किया, दान दिया।

पुराणकारों ने कन्या की शादी के बाद जिनालय के दर्शन हेतु जाने का भी उल्लेख किया है। वज्रजंघ धार्मिक उत्साह को प्रकट करने के लिए अपनी पत्नी श्रीमती के साथ महापूत चैत्यालय में गया। वज्रजंघ पूजा की भारी सामग्री लेकर जिन मंदिर में पहुँचा, वह मंदिर मेरू पर्वत के समान ऊँचा था। श्रीमती के साथ–साथ चैत्यालय की प्रदक्षिणा देता हुआ वज्रजंघ ऐसा प्रतीत होता था मानों महाकान्ति से युक्त सूर्य मेरू की प्रदक्षिणा देता हुआ सुशोभित होता था।

पुराणों में ऐसे भी उल्लेख मिलते हैं जहाँ स्त्रियाँ मुनियों से अपने संतान होने या न होने के लिए पूछती थी। वाराणसी नगरी में अचल नामक प्रसिद्व राजा था। उसकी गुणरूपी रत्नों से विभूषित गिरि देवी नामक स्त्री थी। किसी दिन चित्रगुप्त इस सार्थक नाम को धारण करने वाले तथा शुद्ध चेष्टाओं के धारक मुनिराज ने आहार के लिए उसके घर में प्रवेश किया। मुनिराज को संतुष्ट आहार देने के बाद उसने अपने गृहस्थ जीवन के सफल या असफल होने के बारे में पूछा।

एक स्थान पर राम के साथ सीता द्वारा जिनालय में जाकर बसन्तऋतु के समक्ष के समय पूजा करने का भी उल्लेख मिलता है। एक स्थान पर कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, सुप्रभा के मुनिराज दर्शन के लिए जाने का भी उल्लेख है।

कन्या रूप में सुलोचना द्वारा जिनेन्द्रदेव की पूजा करने का भी उल्लेख है। सुलोचना ने श्री जिनेन्द्रदेव की अनेक प्रकार की रत्नमयी बहुत सी प्रतिमाएँ बनवायी थी और उनके सब उपकरण भी सुवर्ण के बनवाये थे। प्रतिष्ठा तथा तत्सम्बन्धी अभिषेक हो जाने के बाद वह उन प्रतिमाओं की महापूजा करती थी। अर्थपूर्ण स्तुतियों द्वारा श्री अर्हन्तदेव की भक्तिदेव की भक्तिपूर्वक स्तुति करती थी, पात्र दान देती थी। महामुनियों का सम्मान करती थी। धर्म को सुनती थी तथा धर्म को सुनकर आप्त आगम और पदार्थों का बार–बार चिन्तन करती हुई सम्यक् दर्शन की शुद्धता को प्राप्त करती थी। अथान्तर फाल्गुन महीने की अष्टाहिका में भक्तिपूर्वक श्री जिनेन्द्रदेव की अष्टादि की पूजा की विधिपूर्वक प्रतिमाओं की पूजा, उपवास करने का भी उल्लेख मिलता है।

स्त्रियों द्वारा महातप का भी उल्लेख मिलता है। विमला और सुप्रभा नामक देवियाँ नन्दीश्वर पर्व की यात्रा में जिनपूजा के लिए आयी थी कि किसी कारण संसार से विरक्त हो चित्त में इस प्रकार विचार आया कि यदि हम मनुष्य भव को प्राप्त हो तो महातप करेंगी। कनकमाला नामक स्त्री द्वारा मुक्तावली नामक तप करने का भी उल्लेख है।

विनय श्री द्वारा सर्वभद्र नामक उपवास का भी उल्लेख मिलता है। विमलश्री द्वारा पद्मावती आर्यिका के समीप दीक्षा लेकर आचाम्ल वर्धन नाम का तप किया।

श्री कान्ता द्वारा रत्नावली तप ग्रहण किया गया था। वन्धुयश नामक कन्या द्वारा श्रीमती नामक आर्यिका से जिनदेव प्ररूपित प्रोशध व्रत धारण किया गया था। पहले और आगे के दिनों में एकासन के साथ अष्टमी और चतुर्दशी के दिन उपवास आदि करना प्रोशधोपवास है।

पवित्र अन्तःकरण को धारण करने वाली प्रियव्रता नामक स्त्री को श्रावक के व्रत धारण करने में शुद्ध चरित्र को धारण करने में स्त्रियों को सबसे श्रेष्ठ बताया है। इस प्रकार जैन संस्कृत पुराणों में नारी द्वारा किये गये अनेक व्रत एवं उपवासों का उल्लेख है। साथ ही इन जैन संस्कृत पुराणों में अनेक देवियों जैसे– सरस्वती, लक्ष्मी, शचि, एवं अनेक अप्सराओं का भी वर्णन मिलता है।

संदर्भ

1. प्राचीन भारत में नारी की स्थिति – ए.एस.अल्तेकर
2. हिन्दु धर्मकोश – डॉ. राजबली पाण्डेय
3. वीमन इन जैन लिटरेचर एण्ड आर्ट – के. कुमारी सक्सैना
4. आदि पुराण में प्रतिपादित भारत – नेमी चन्द्र शास्त्री
5. वैदिक साहित्य और संस्कृति – बलदेव उपाध्याय